श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा द्वारा धर्मसभा संत सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

आचार्य पीठ की स्थापना के दिव्य 25 वर्ष पूरे होने के इस पावन अवसर पर आप सभी संतों और साधकों का सान्निध्य पाकर मैं धन्य महसूस कर रहा हूँ। महाराज अवधेशानंद गिरी जी एवं संत समाज को मेरा चरण स्पर्श।

यह सिर्फ एक आध्यात्मिक आयोजन नहीं है बल्कि यह हमारे प्राचीन मूल्यों और संस्कारों को संरक्षित और संवर्धित करने वाला समागम है और ऐसे समागम का हिस्सा होना, हम सभी के लिए एक विशेष अवसर है।

यह अध्यात्म और पवित्रता का अवसर है, "श्री दत्त जयंती" का पावन अवसर है। यह पूज्य श्री स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के आचार्यपीठ पर नियुक्ति के दिव्य पच्चीस वर्ष पूर्ण होने का अवसर है।

अपनी दीक्षाओं और सामाजिक कार्यों के माध्यम से स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज ने लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का काम किया है। चाहे एक गुरु के रूप में हो, एक संत के रूप में हो, या फिर एक लेखक और दार्शनिक के रूप में हो, आध्यात्मिक मूल्यों और परंपराओं के संवर्धन में तथा मानव-जाति की सेवा और कल्याण में उनका अप्रतिम योगदान है।

श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा हमारे देश की प्राचीन परंपराओं और आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक है। आचार्य पीठ के 25 वर्षों में, धर्म, सेवा और ज्ञान के सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए दृढ़ प्रतिबद्धता देखी गई है। इन सिद्धांतों के प्रति अखाड़े के अटूट समर्पण ने न केवल इसके अनुयायियों के जीवन को समृद्ध किया है, बल्कि हमारे राष्ट्र की आध्यात्मिक प्रगति में भी योगदान दिया है।

अखिल भारतीय संत समागम एक अनूठा मंच है जो देश भर से प्रबुद्ध आत्माओं, संतों और आध्यात्मिक नेताओं को एक साथ एक मंच पर लाता है औरएक सामंजस्यपूर्ण समाज की खोज में संवाद और एकता को बढ़ावा देता है।

यह मण्डली हमारी सामूहिक आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक है, जो परमात्मा तक पहुँचने के लिए हमारे द्वारा अपनाए जाने वाले विभिन्न मार्गों से परे है।इस तरह की सभाएँ एकता, आपसी सम्मान और विचारों के आदान प्रदान को बढ़ावा देती हैं, जिससे हमारे समाज के आध्यात्मिक ताने बाने को मजबूती मिलती है।

जैसे ही हम आध्यात्मिक चिंतन और सांस्कृतिक उत्सव के इन तीन दिनों में डूबते हैं, आइए हम अपनी विरासत को संरक्षित करने के महत्व को याद रखें। हमारी परंपराएँ केवल अतीत के अवशेष नहीं हैं बल्कि वे जीवित संस्थाएँ हैं जो हमारे वर्तमान को आकार देती हैं और हमारे भविष्य का मार्गदर्शन करती हैं।

हम अक्सर अपनी संस्कृति के लिए जितने शब्दों का प्रयोग करते हैं, उनमें से एक है - सनातन अर्थात शाश्वत या स्थायी। लेकिन यह भी कहा गया है कि विश्व में एक चीज जो स्थायी है, वह है परिवर्तन। परिवर्तन को ही दुनिया का एकमात्र स्थायी नियम बताया गया है। देखा जाए तो ये दोनों कथन ही एक-दूसरे के विपरीत हैं। लेकिन ऐसा नहीं है।

मानव-जाति का इतिहास हो या किसी भी अन्य प्रजाति का इतिहास, केवल वही चीजें लंबे समय तक अपना अस्तित्व बना कर रख पाई हैं जो स्वयं को अपडेट करती रही हैं और वही समय के साथ प्रासंगिक रही हैं। और हमारी संस्कृति ने हमेशा से बदलाव को आत्मसात किया है और यही कारण है कि यह सनातन है, शाश्वत है।

लचीलापन और बदलाव किसी समाज के अस्तित्व को बनाए रख सकते हैं। लेकिन यह बदलाव कैसे आता है? भारत में बदलाव लगभग हमेशा अपने अंदर से आया है, आत्म सुधार से आया है। और आत्म सुधार की यह परंपरा भारतीय संस्कृति के मूल में है। उदाहरण के तौर पर देखें तो जब कर्मकांड या अनुष्ठान थोड़े जटिल हो गए, तो आदि शंकर आए जिन्होंने वेदांत का रास्ता दिखाया और मोक्ष के लिए आवश्यक भक्ति का पाठ पढ़ाया।

एक ऐसा समाज, जो चर्चा में विश्वास करता है, विचार-विमर्श जिसकी ताकत होती है, वह हमेशा ऐसे संतों और महापुरुषों को पैदा करता है जो अतिरेक या किसी चीज की व्यर्थ की अधिकता को सही करते हुए समानता एवं संतुलन स्थापित करते हैं। हमारे समाज में, हमारे इतिहास में ऐसे संतों और महापुरुषों के ढेरों उदाहरण हैं।

संघर्ष और रूढ़िवादिता के युग में भगवान बुद्ध और भगवान महावीर ने अहिंसा के मूल्यों, आत्म-निरीक्षण की भावना और अच्छे आचरण का प्रचार-प्रसार किया।

भारत की धरती वो धरती है, जहां से हमेशा बदलाव का जन्म हुआ। यही वजह है कि कई बाधाओं के बाद भी हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति और परंपरा आज भी जिन्दा है।

ऐसी सभ्यताएं जो समय के साथ खुद को बदलने में नाकाम रहीं वो मिट गईं। हमारा इतिहास गवाह है कि हमारे संतों द्वारा किये गए बदलाव का असर काफी व्यापक और दीर्घकालिक रहा और इसने हमारे इतिहास की धारा को बदल कर रख दिया।

मैं इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन में शामिल सभी लोगों के प्रयासों की सराहना करता हूं। आध्यात्मिक मूल्यों और सांस्कृतिक अखंडता को बढ़ावा देने के लिए आपका समर्पण सराहनीय है और यह हम सभी के लिए प्रेरणा का काम करता है।

ये तीन दिन दिव्य आशीर्वाद, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और हमारे महान राष्ट्र को परिभाषित करने वाले कालातीत मूल्यों को बनाए रखने के लिए नई प्रतिबद्धता से भरे हों।

मुझे विश्वास है कि यह दिव्य आध्यात्मिक महोत्सव हमारी आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का काम करेगा और हमारी सनातन संस्कृति और परंपरा की यह अविरल धारा ऐसे ही लगातार बहती रहेगी।

राष्ट्र और विश्व कल्याण के लिए समर्पित आपका यह भागीरथ प्रयास सफल हो, इसका आगे और व्यापक विस्तार हो, इसी कामना के साथ मैं श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा और हरिहर आश्रम को ऐसे विशिष्ट सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयोजन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

आप सभी संतजनों को मेरा पुनः नमन।